## मेरी प्रिय कहानी

# परमात्मा का मंदिर

मैंने सुना है कि एक नीग्रो एक रात एक चर्च के द्वार पर दस्तक दिया। लेकिन चर्च था सफेद चमड़ी वालों का। पादरी ने द्वार तो खोले, लेकिन पादरी डरा। यद्यपि यही पादरी रोज-रोज प्रवचन देता था कि सब परमात्मा के बेटे हैं, एक ही परमात्मा के बेटे हैं। और यही पादरी रोज-रोज समझाता था कि अपने पड़ोसी को वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने को। और यही पादरी यह भी कहता था कि परमात्मा प्रेम है। लेकिन यह काला आदमी, यह नीग्रो रात चर्च के द्वार पर दस्तक देगा...पादरी थोड़ा डरा। यह चर्च तो सफेद चमड़ी वालों का था। उस नीग्रो ने कहा : मुझे भीतर आने दो। तुम्हारी बातें सुन-सुन कर मेरी हिम्मत बढ़ गई है। तुम कहते हो कि प्रेम परमात्मा है। तुम कहते हो कि पड़ोसी को प्रेम करो जैसा अपने को प्रेम करते हो। मैं भी पड़ोसी हूं तुम्हारा। और तुम कहते हो कि सभी उसकी संतान हैं। मैं भी उसकी संतान हूं। मुझे भीतर आने दो। मेरे हृदय में भी बड़ी पुकार उठी है और मैं उसकी प्रार्थना करना चाहता हूं। पादरी एकदम न भी न कह सका, क्योंकि कैसे झुठलाए उन सारी बातें को जो उसने हमेशा कही हैं? और हां भी न कह सका, क्योंकि वे तो बातें ही थीं। वे तो करने के लिए अच्छी थीं। कुछ बातें होती है जो सिर्फ करने की होती हैं, कहने की होती हैं, बात के ही लिए होती है। जिंदगी उनसे बिलकुल भिन्न होती है। असलियत तो यह थी कि काला आदमी भीतर प्रवेश करे, यह उसकी हिम्मत न थी। उसने तरकीब निकाली।

पंडित-पुरोहित तो सदा से चालबाज रहे हैं, सदा से चालबाज और चतुर रहे हैं। चतुर थे इसीलिए तो पंडित-पुरोहित हो गए। चालबाज थे इसीलिए तो पंडित-पुरोहित हो गए। सदियों से उन्होंने शोषण किया है अपनी चालबाजी से।

उसे एक चालबाजी समझ में आई। उसने कहा कि जरूर-जरूर तुम आना, लेकिन पहले पवित्र हो लो। उपवास करो। प्रार्थना करो। सब पाप छोड़ो। कामवासना छोड़ो। क्रोध छोड़ो। लोभ छोड़ो। उसने इतनी लंबी फेहरिस्त दी, इसी आशा में कि न कभी यह नीग्रो ये बातें पूरी कर पाएगा और न यह झंझट खड़ी होगी इसके मंदिर में प्रवेश की। जैसे शुद्र को ब्राह्मण प्रवेश न करने दे मंदिर में, वैसी ही स्थिति अमरीका में नीग्रो के ऊपर है, नीग्रो शूद्र हो गया है। उसका प्रवेश नहीं हो सकता चर्च में। पुरोहित खुश था। फेहरिस्त उसने इतनी लंबी दी थी कि बड़े-बड़े संत भी पूरी नहीं कर पाएं। ओर जब कर पाएगा पूरी तब देखेंगे।

चला गया नीग्रो। सीधा-सादा आदमी, मान ली उसने बात कि यह तो ठीक है, जब पवित्र हो जाऊं तभी तो प्रार्थना करूंगा। उस भोले आदमी को यह खयाल न आया कि सफेद आदमियों पर यह शर्त लागू नहीं होती। किन-किन सफेद लोगों से तुमने कहा है? किन-किन गोरों को तुमने कहा है कि पवित्र होकर आओ? मुझ अकेले पर यह शर्त लागू होती है! चला तो गया। सीधा-सादा आदमी, बात मान ली, लग गया अपने को पवित्र करने में।

तीन सप्ताह बाद पादरी चौंका। क्योंकि सुबह ही सुबह सूरज ऊग रहा था, द्वार खोल रहा था पादरी चर्च के, कि देखा कि वह नीग्रो आ रहा है। वह बहुत घबड़ाया कि अब यह फिर बात उठाएगा। और घबड़ाहट और भी बढ़ गई, क्योंकि उस नीग्रो के आसपास पवित्रता का एक ऐसा आभामंडल था जैसा कि इस पादरी ने कभी नहीं देखा था। इसने तो आभामंडल देखे थे केवल संतों की तस्वीर में। उस नीग्रो के चारों तरफ आभामंडल था। एक अपूर्व अंतर्ज्योति से दैदीप्यमान वह नीग्रो चला आता था। उसे किस मुंह से इनकार करेगा? अब तो बड़ी मुश्किल हुई जाती है। लेकिन वह नीग्रो आया, द्वार के बाहर ही खड़ा हुआ, हंसा और वापस लौट गया। पादरी तो और भी चौंका कि बात क्या हुई? भागा, उस नीग्रो को पकड़ा, कहा कि क्या बात है? हंसे क्यों? लौट क्यों चले? पूछा क्यों नहीं मंदिर में आने के लिए? उस नीग्रो ने कहा : कल रात परमात्मा प्रकट हुए। तीन सप्ताह से उपवास करता था, प्रार्थना करता था, पूजा करता था...बस उसकी ही याद में लगा दिए थे तीन सप्ताह...तुमने जो कहा था। कल रात परमात्मा प्रकट हुआ और कहने लगा : पागल, तू उस चर्च में जाने की फिक्र छोड़। मैंने पूछा : क्यों? तो परमात्मा ने कहा : अब तू नहीं मानता तो तुझे बताए देता हूं। उस चर्च में जाने की तो मैं भी कई सदियों से कोशिश कर रहा हूं, वे मुझे भी भीतर नहीं घुसने देते, वे तुझे क्या भीतर घुसने देंगे! मंदिर खाली पड़े हैं। मस्जिदें खाली हैं। चर्च खाली हैं। गुरुद्वारे खाली हैं। सिनगॉग खाली हैं। सदियां हो गई, परमात्मा को भी वहां प्रवेश नहीं है। लेकिन यह अच्छा ही है।

*खुशनशी है कि चश्मो-दिल की मुराद*

कि हमारे अंतरतम की आकांक्षा और हमारी आंखों की आकांक्षा, उसके दर्शन की इच्छा और दिल को उसके दिल में डुबा देने की इच्छा...

*खुशनशी है कि चश्मो-दिल की मुराद*
*दैर में है न खानकाह में है*

अच्छा ही है कि वह हमारी आंखों का प्यारा, आंखों का तारा और हमारे दिल का प्यारा न तो मंदिरों में है, न मस्जिदों में है।

*हम कहां किस्मत आजमाने जाएं*
*अब कहीं और भाग्य को आजमाने की जरूरत नहीं है।*
*हर सनम अपनी बारगाह में है*
*अपने भीतर, अपनी बांहों में है!*

*— ओशो*